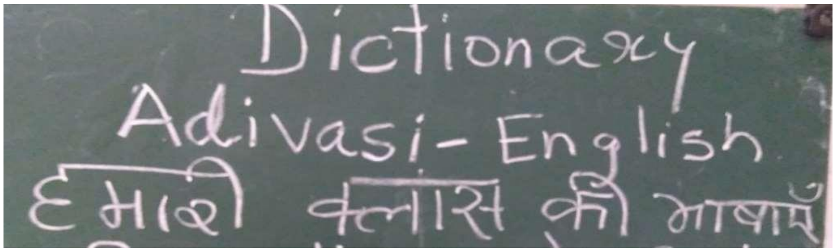
बच्चों की अपनी भाषा के लिए कक्षा में स्थान बनाना

भारत में भाषाएं



उदाहरण 1: एक दिन, राशी और उसकी कक्षा के बच्चों ने अपनी कक्षा के लिए डिक्शनरी बनाने की प्रक्रिया शुरू की। राशी मध्य प्रदेश के एक ग्रामीण आदिवासी स्कूल में लगभग 6 महीने से शिक्षिका के रूप में कार्यरत थी | आदिवासी भाषा “बारेली” और संस्कृति को बनाए रखने के लिए स्कूल दृढ़ संकल्पित था और स्कूल का वातावरण बच्चों की भाषा के प्रति सहिष्णु और ग्रहणशील था | राशी की कक्षा में जो डिक्शनरी बनाई जा रही थी, उसमें अंग्रेज़ी (सामाजिक-आर्थिक आकांक्षा की भाषा), हिंदी (राज्य की भाषा) और बारेली (बच्चों की घरेलू भाषा) भाषाओं में बच्चों के आसपास अक्सर देखी जानेवाली वस्तुओं के नाम शामिल थे । राशी ने ब्लैकबोर्ड पर तीन कॉलम बनाए और लेबल करने लगी "अंग्रेज़ी", "हिंदी" और "बारेली"। उसी समय एक बच्चे ने एक सुझाव के साथ उन्हें टोका ।

बच्चा (c): दीदी, बारेली नहीं आदिवासी लिखें |

राशी (R): मगर,अभी हम भाषा का नाम लिख रहे हैं ना, जैसे- हिंदी,इंग्लिश वैसे ही बारेली |

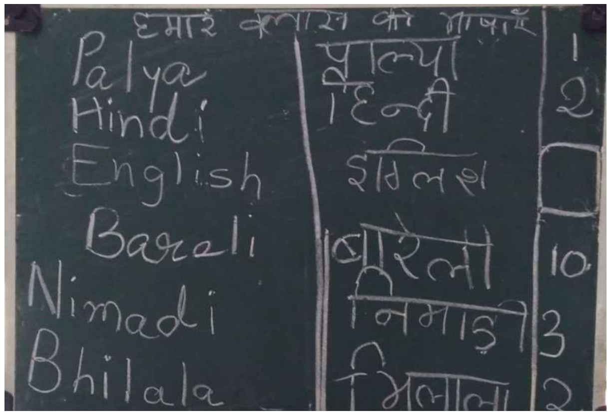
C: लेकिन ये सिर्फ बारेली डिक्शनरी थोड़ी है, ये आदिवासी डिक्शनरी है |

R: हाँ, आदिवासी शब्द हैं, मगर भाषा का नाम तो बारेली है न!

बच्चा हिचकिचाहट के साथ चुपचाप चला गया लेकिन वह स्पष्ट रूप से असहमत था | राशी ने यह समझने के लिए कि बच्चे को किस बात ने परेशान किया, उसे प्यार से प्रोत्साहित किया ।

C: पर मैं तो भिलाला हूँ न |

बातचीत कुछ देर और ऐसे ही चली फिर राशी को पता चला कि जिन्हें वह पढ़ाती है उन 12 छात्रों के छोटे समूह के बीच भी कम से कम चार विभिन्न आदिवासी भाषाएं बारेली, पाल्या, निमाड़ी और भिलाला मौजूद थी | एक ऐसी जानकारी जो कि उसके पास नहीं होने से उसे अत्यंत आश्चर्य और ग्लानि हुई कि वह पिछले 6 महीनों से यह मानती रही कि वहाँ बारेली ही एकमात्र आदिवासी भाषा थी।



अगर इन चार भाषाओं में मराठी, गुजराती, अंग्रेज़ी और हिंदी के कुछ भाषाई टुकड़ों को जोड़ते हैं तो आप दूर आदिवासी गाँव में स्थित इस छोटी कक्षा में ज़बरदस्त भाषाई विविधता का एहसास कर सकते हैं। *भारत के शहरों, क़स्बों और गाँवों में फैले क़रीब 8.5 लाख सरकारी प्राथमिक स्कूलों में पाई जानेवाली भाषाई विविधता की संभावना पर विचार करें!*

नोट: 2001 जनगणना के आंकड़े के आनुसार कुल 1652 मातृभाषा को आधिकारिक रूप से मान्यता दी गई है। इनमें से ऐसी भाषाएं जिन्हें विभिन्न मापदंडों के तहत समान समझा गया उन्हें, एक भाषा के नीचे समेट लिया गया। इस प्रक्रिया के अनुसार इन 1652 भाषाओं को कुल 122 भाषा- समूहों में वर्गीकृत किया गया है। इन 122 भाषाओं मे से केवल 26 भाषाओं ने ही हमारे स्कूल में निर्देश के माध्यम की भाषा के रूप में अपनी जगह बनाई हैं। (झिंगरान,2009)

इस प्रकार मोटे तौर पर वर्गीकृत 122 भारतीय भाषा- समुहों में से 96 भाषाओं को अभी भी आधिकारिक तौर पर स्कूल से बाहर रखा गया है। राशी की कक्षा से कोई भी मातृभाषा, मानक स्कूल पाठ्यक्रम में अपना रास्ता नहीं बना पाई है। यह विविधता हमें कक्षाओं के भीतर की भाषा की एक विस्तृत श्रृंखला की ओर ले जाती है। इनमें से कुछ स्थितियों को नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया है|

कक्षाओं के भीतर भाषा की स्थितियों की विविधता के उदाहरण

a. एक कक्षा में कई भाषाओं वाले छात्र हैं। कक्षा में निर्देश के माध्यम की एक भाषा है और उन्हें आपस में जोड़नेवाली एक सार्वजनिक संपर्क भाषा मौजूद है। शिक्षक और छात्र एक-दूसरे की बात को संपर्क भाषा के माध्यम से समझ लेते हैं। (जैसे- मध्य प्रदेश में एक अंग्रेज़ी माध्यम की कक्षा, शिक्षक और छात्र एक-दूसरे से हिंदी भाषा के माध्यम से जुड़ते हैं) ।

b. एक कक्षा में कई भाषाओं वाले छात्र हैं। कक्षा में निर्देश के माध्यम की एक भाषा है, लेकिन सभी के लिए कोई एक संपर्क भाषा मौजूद नहीं है। शिक्षक और कुछ छात्र संपर्क भाषा के माध्यम से एक-दूसरे को समझते हैं लेकिन कक्षा में छात्रों के कुछ समूह इस संपर्क भाषा को नहीं समझ सकते।(उदाहरण के लिए ऊपर के उपाख्यान (anecdote) में कुछ भिलाला छात्र हिंदी नहीं समझ सकते हैं)।

c. कक्षा के सभी छात्र घर पर एक ही भाषा बोलनेवाले हैं। लेकिन कक्षा में निर्देश का माध्यम यह नहीं है (जैसे, कर्नाटक के एक सरकारी स्कूल में लाम्बानी भाषी क्षेत्र के बच्चे) । शिक्षिका बच्चों की भाषा को समझती है और सिखाने के लिए घर की भाषा और स्कूली भाषा के संयोजन का उपयोग करती है।

d. कक्षा के सभी छात्र घर पर एक ही भाषा बोलनेवाले हैं। लेकिन कक्षा में निर्देश का माध्यम यह नहीं है (जैसे कर्नाटक के एक सरकारी स्कूल में लाम्बानी भाषी क्षेत्र के बच्चे)। किन्तु इस स्थिति में शिक्षक बच्चों की भाषा को नहीं समझते और इसलिए बच्चों के साथ संवाद में वे इसका उपयोग नहीं करते|

e. घर की भाषा, स्कूली भाषा के समान है| हालाँकि, स्कूल में पढ़ाई जा रही भाषा की तुलना में बच्चे विभिन्न क्षेत्रीय विविधताओ के साथ इस भाषा का प्रयोग करते हैं (जैसे- अविभाजित आंध्र प्रदेश में "आंध्र-तेलुगु" का उपयोग करनेवाले स्कूल के बच्चे "तेलंगाना-तेलुगु" बोलते हैं | शिक्षक यह मान कर चलते हैं कि बच्चे स्कूल की विविधता को समझते हैं जबकि वे इसे नहीं समझते |

f. कक्षा में अधिकांश बच्चे स्कूल की भाषा बोलते हैं, हालाँकि छात्रों का एक समूह राज्य की प्रमुख नहीं बोलता है| (उदाहरण के लिए एक मराठी माध्यम वाले स्कूल में बिहारी प्रवासी बच्चे)

नोट: घर की भाषा और स्कूल की भाषा के अलग-अलग होने की वजह से प्राथमिक विद्यालय के 25% बच्चों को शुरुआती दिनों में गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है | (झिंगरान, 2009)

चर्चा हेतु प्रश्न:

1. कक्षा (या जहाँ भी आप पढ़ाते/काम करते हैं) में कितनी मातृभाषाएं मौजूद हैं?
2. जब आप एक छात्र थे तो आपके विद्यालय में निर्देश के माध्यम की भाषा, आपकी मातृभाषा थी या उससे अलग कोई और भाषा थी? क्या इससे आपको कोई फ़र्क पड़ा? कैसे?

कक्षा में बच्चे की भाषा

कल्पना करें कि इस हैंडआउट की शुरुआत में दिया गया वार्तालाप कुछ अलग ढंग से हुआ होता! क्या होता यदि राशी ने बच्चे को यह बताने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया होता कि उसे क्या बात परेशान कर रही है? क्या होता यदि बच्चे को अपनी बात रखने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया गया होता जो कि उसके लिए उसकी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था? निश्चित रूप से, कक्षा में हिंदी-अंग्रेज़ी-बारेली डिक्शनरी के निर्माण का काम ज़ारी रहता। इन सब के दौरान निमाड़ी, पाल्या और भिलाला बोलनेवाले बच्चे क्या महसूस कर रहे होंगे? क्या वे कक्षा में समावेशित महसूस कर पा रहे होंगे ? क्या वे अपने विचार व्यक्त कर पाएंगे? क्या वे कक्षा में चल रही किसी प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित होंगे ?

इस उदाहरण में शिक्षक और बच्चे फिर भी एक-दूसरे से हिंदी भाषा के माध्यम से संवाद करने में सक्षम थे। वैसी परिस्थितियों की कल्पना कीजिए जिसमें शिक्षक और छात्र के बीच कोई संपर्क भाषा ही उपलब्ध ना हो! कक्षाओं में निर्देश की भाषा और बच्चों की घरेलू भाषा बहुत अलग-अलग होने के कारण उन्हें यह समझ नहीं आता कि कक्षा में क्या चल रहा है। ऐसी स्थिति में उन्हें किन अलग-अलग कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा? यहाँ हम ऐसी दो प्रकार की कठिनाइयों पर विचार करते हैं - पहला, उनकी शिक्षा पर पड़नेवाला प्रभाव और दूसरा, उनके सामाजिक-भावनात्मक स्वास्थ्य पर पड़नेवाला प्रभाव।

1. **बच्चे की भाषा और उनका सीखना**

आइए हम निम्नलिखित दो उदाहरणों पर विचार करें।

उदाहरण 2: कक्षा 1 में, मोहिका की कक्षा एक अर्धवृत्त आकार में बैठी है। सारे बच्चे एक ही भाषा बोलते हैं जबकि निर्देश के माध्यम की भाषा अलग है। मोहिका बच्चों की भाषा समझती है। प्रत्येक बच्चा मेले में जाने के अपने अनुभव को चित्रित करने में व्यस्त है। उन्हें चित्र बनाने के लिए कुछ समय और स्थान देने के बाद मोहिका प्रत्येक बच्चे के पास जाती है और पूछती है कि उन्होंने क्या बनाया है। पूरी बातचीत बच्चे की मातृभाषा में होती है। शिक्षिका, बच्चे द्वारा किए गए वर्णन को चित्र के नीचे उसकी ख़ुद की भाषा में लिखती हैं और इसे वापस बच्चे को पढ़कर सुनाती है।(चूँकि, बच्चे के घर की भाषा की कोई लिपि नहीं है, अत: शिक्षिका बच्चे के शब्दों को क्षेत्रीय भाषा की लिपि में लिखती है।) बाद में मोहिका स्कूल की भाषा में भी वही कहानी दोबारा लिखती है और बच्चे के साथ साझा करती है।

इस अभ्यास का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को एक ऐसी भाषा जिसके साथ वह सहज हैं, में उनके अपने अनुभवों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना है। एक बार जब इस तरह वे अपना विचार व्यक्त करते हैं तो शिक्षिका भी उनके अनुभवों को सुनने में अपनी रुचि दिखाती है| बच्चे अपनी मातृभाषा में बिना किसी रूकावट के बोलते हैं, शिक्षिका उसी को काग़ज़ पर लिखती जाती हैं | बच्चे देखते हैं कि उनकी भाषा को शिक्षिका द्वारा महत्व दिया गया है और उसे लिखा गया है| उन्हें यह जानकर अच्छा लगता है कि जो उन्होंने कहा है उनके लिखित रूप को फिर से पढ़कर सुनाया जा सकता है। यहाँ वे यह भी समझते हैं कि एक ही विचार को किसी अलग भाषा में भी व्यक्त किया जा सकता है ।



उदाहरण 3: शिक्षिका कक्षा 3 में प्रवेश करती है। वह बच्चों को अपनी कॉपी और पेन बाहर निकालने के लिए कहती है। वह ब्लैकबोर्ड के एक कोने में तारीख़ और दिन लिखती है और बच्चों को इसे नोट करने के लिए कहती है। वह फिर तेज़ी से बच्चों के पास जाती है और उनसे कॉपी उठाकर दिखाने के लिए कहती है कि क्या उन्होंने वही लिखा है जो उन्हें लिखने के लिए कहा गया है। सुनील, जिसका हाल ही में स्कूल में दाख़िला हुआ है और जो अभी भी स्कूल की भाषा से अपरिचित है, अपनी बंद कॉपी के साथ बैठा है । जैसे ही शिक्षिका उसके पास पहुँचती है और उसे कॉपी दिखाने के लिए कहती है वह चारों ओर देखता है और अन्य बच्चों की देखादेखी अनिश्चितता से शिक्षिका का अनुपालन करने लगता है| शिक्षिका उससे पूछती है कि वह पृष्ठ कहाँ है जिसमें उसने काम शुरू किया है। सुनील उनकी ओर देखता है, फिर अन्य छात्रों को देखता है पर अब भी वह पक्का नहीं है। शिक्षिका बोर्ड तक जाती है और उस जगह की ओर इशारा करती है जहां तारीख़ और दिन लिखा होता है। सुनील अपनी घरेलू भाषा में सज्जनता से पूछता है "यह लिखना है?" शिक्षिका सिर हिलाती है। सुनील जल्दी से दिन और तारीख़ को कॉपी करता है और अपनी कॉपी के साथ शिक्षिका की ओर जाता है।

यहाँ एक बहुत ही साधारण निर्देश को लेकर बच्चे की समझ, निर्देश के माध्यम की भाषा की अपरिचितता के कारण बाधित होती है। सीखने के लिए शिक्षक और पाठ्यपुस्तक को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसकी अनुपस्थिति में बच्चों का सीखना बहुत बुरी तरह से प्रभावित होता है जो अक्सर उनके मौन होने और कक्षा में कम भागीदारी का कारण बन जाता है। हालाँकि यह उदाहरण, बच्चे द्वारा एक सरल निर्देश को समझने की कठिनाइयों को दिखाता है पर समझ की कमी की यह चुनौतीस्कूली क्रियाकलाप के अन्य सभी पहलुओं तक फैला होता है। शोध भी ऐसे साक्ष्य देते हैंहै कि जो बच्चे जिस भाषा को अच्छी तरह समझते हैं, उसी भाषा में सिखाए जाने पर वे अधिक अच्छे से सीखते हैं |

यहाँ दिए गए उदाहरणों में कक्षाओं के उस अंतर का वर्णन किया गया है जिसमें जहाँ एक कक्षा में दिए जा रहे निर्देशों को बच्चा समझने में सक्षम नहीं है बनाम दूसरी कक्षा जहाँ बच्चा स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करने और पूरी तरह से कक्षा में भाग लेने में सक्षम है । ये कारक बच्चों की स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उनकी सोच, समस्या समाधान और अन्य उच्च कौशल को प्रासंगिक रूप से प्रभावित करते हैं (विशेषकर पहली पीढ़ी के सीखने वाले बच्चे को)।

नोट: दुनिया के सबसे बड़े अध्ययन में आठ वर्षों तक संयुक्त राज्य अमेरिका के 210 000 छात्रों के प्रदर्शन पर नज़र रखी गई। अध्ययन में पाया गया कि जो छात्र जितने लंबे समय तक अपनी MT (घरेलू भाषा) में सीखे, उसका शैक्षिक प्रदर्शन उतना ही बेहतर रहा। इस अध्ययन में यह भी शामिल था कि उन्होंने अपनी द्वितिय भाषा (अंग्रेज़ी) को कितने अच्छे तरीक़े से सीखा था| (स्कुटनब-कांगस और डनबर, 2010, पृष्ठ 9)।

2. बच्चे की पहचान, संस्कृति और अनुभवों का बहिष्कार

जब बच्चों की भाषाओं को कक्षा से बाहर रखा जाता है, तब इससे केवल उनकी शिक्षा ही बाधित नहीं होती। वे कई मायनों में सामाजिक-भावनात्मक रूप से भी पीड़ित होते हैं। वे इस बात पर ग़ौर करने लगते हैं और समझ पाते हैं कि उनकी भाषाओं को कक्षा मे महत्त्व नहीं दिया जाता है| चूंकि, भाषा न केवल संचार का एक साधन है बल्कि संस्कृति और पहचान को स्थापित करने का भी एक माध्यम है| अत: बच्चा यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि कक्षा में उसकी संस्कृति को भी महत्त्व नहीं दिया जाता है| जब स्कूलों में संस्कृतियों और भाषाओं को सम्मिलित नहीं किया जाता है तब उन समुदायों के अनुभवों और ज्ञान को भी दरकिनार कर दिया जाता है। ऐसे कौन-से समूह हैं जिनके अनुभव, ज्ञान और भाषाओं को बाहर किए जाने की सबसे अधिक संभावना है? ये सामाजिक और आर्थिक रूप से समाज के सबसे वंचित समूह हैं। आमतौर पर इनमें आदिवासियों, प्रवासियों, और अन्य कमज़ोर वर्ग की हिस्सेदारी होती है|



उदाहरण 4: एक आदिवासी स्कूल की कक्षा 6 में "द ट्री" नामक एक पाठ के पीछे दिए गए अभ्यास को करवाने से पहले, अंग्रेज़ी शिक्षक ने बच्चों को पाठ समझाया| इन अभ्यासों में "मिलान करें ", "रिक्त स्थान भरें", "प्रश्न-उत्तर", आदि शामिल थे। छात्रों ने अभ्यास को करने में काफ़ी संघर्ष किया लेकिन वे अभ्यास को करते रहें। अचानक, शिक्षक को बच्चों से उनके परिवेश में मिलनेवाले पेड़ों के बारे में उनकी भाषा में पूछने का विचार आया| बच्चे अत्यंत उत्साहित होकर बातचीत करने लगे और जितने भी पेड़ों के नाम वे जानते थे, बताने लगे| वे सहजता से अपने आसपास के पेड़ों के नामों को अपनी भाषा और निर्देश के माध्यम की भाषा में एक सूची बनाने के लिए सहमत हुए| इसके बाद उन्होंने कम से कम पचास पेड़ों के नाम एवं उनके उपयोग, जैसे- औषधीय गुणोंवाले वृक्ष, फल देनेवाले वृक्ष, लकड़ी देनेवाले वृक्ष आदि की सूची में वर्गीकृत किया| शिक्षक ने बाद में बच्चों को उन पेड़ों के अंग्रेज़ी नाम बताएं। सभी के लिए पाठ का अभ्यास एक उदासीन गतिविधि से सीखने की एक रोचक गतिविधि में बदल गया था।

यह ज्ञान, बच्चों के ज्ञान के भंडार का एक छोटा-सा हिस्सा भर था, जिसमें खेती के उच्च कौशल, पशुपालन, विभिन्न शिल्प, ख़ाना पकाने, बच्चे की देखभाल, आदि भी शामिल थे। भाषा की बाध्यता और कुछ समुदायों को हीन दृष्टि से देखने के कारण ये बहुमूल्य ज्ञान कक्षा में अपना रास्ता कभी नहीं बना पाते।

कोई भाषा, अन्य की तुलना में ‘बेहतर’ या ‘कमतर’ है, इस धारणा के कारण भी बच्चों को अक्सर एक अन्य प्रकार के भेदभाव का सामना करता पड़ता है| अच्छे शिक्षक, बच्चों की घरेलू शब्दावली और व्याकरण को मानक भाषाओं में बदलकर उनकी भाषा में सुधार लाते हैं। कुछ उदाहरण यहाँ दिए गए हैं।



उदाहरण 5: आठवीं कक्षा के दो छात्र हंसी-मजाक कर रहे हैं। एक युवा शिक्षिका कुछ काम करते हुए उनके पास ही बैठ जाती है। दोनों बच्चे शिक्षिका की उपस्थिति से काफ़ी सहज लगते हैं | यहां तक कि कभी-कभी उन्हें अपने हंसी-मजाक में शामिल होने के लिए कहते हैं, तो कभी उनकी बात काटकर अपनी बात भी मनवा लेते हैं। ऐसे ही एक मौक़े पर उनमें से एक हंसते हुए कहता है ।

S1: दीदी एकदम गांडा है ये | (एक शब्द जो शिक्षक को एक अपशब्द जैसा लगता है) शिक्षिका यह गालियों जैसा शब्द सुनकर चौंक गई| अक्सर यह शब्द देश के हिंदीभाषी जगहों में गाली की तरह प्रयोग किया जाता है| बच्चे में तुरंत अपराध बोध का भाव आ जाता है।

T: और दो जो भी गालियाँ देनी हैं| (तिरस्कार करते हुए) (*बहुत बढ़िया, चलो-चलो और गालियाँ दो*) जिस बच्चे ने यह सब बोला है वह शर्म से सर झुका लेता है। हैरानी की बात यह है कि दूसरा बच्चा उसका बचाव करता है।

S2: दीदी ये गाली नहीं है| हमारी भाषा में बोलते हैं | इसका मतलब बेवक़ूफ़ होता है |

(इसका उपयोग हम अपनी भाषा में करते हैं। इसका अर्थ है "मूर्ख"।) बच्चे के द्वारा इस शब्द का मतलब शिक्षिका को समझाना मार्मिक हैं। वे अन्य क़स्बों और शहरों में इस शब्द के उपयोग के अर्थ को समझते हैं, लेकिन साथ ही, अपने स्थानीय भाषा में वे इसके उपयोग के आदी भी हैं।

उदाहरण 6: कई भारतीय भाषाओं में, सम्मान, स्थिति और परिचितता के साथ लोगों को संदर्भित करने के लिए "आदरसूचक" शब्द का उपयोग किया जाता है। लोगों को इस प्रकार सम्मान या परिचितता देने के लिए हिंदी में तीन स्तर हैं। उदाहरण के लिए "तू", "तुम " और "आप" का उपयोग करना | मानक हिंदी भाषा में एक शिक्षक को "आप" शब्द से सम्मान दिया जाता है। हालांकि, किसी समुदाय की स्थानीय भाषा में ऐसी स्पष्ट मान्यताएं नहीं हैं। यहाँ एक युवा शिक्षिका, अक्सर बच्चों को इस तरह अभिवादन करते पाती हैं:-

C: दीदी, तू वारले छे की? (दीदी, क्या आप ठीक हैं?) एक शिक्षक के लिए मानक हिंदी भाषा के अनुसार "आप" शब्द का उपयोग नहीं किया गया है| जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते है वे बेहतर भाषा को अपनाते जाते हैंहै। जब एक छोटे बच्चे ने बार-बार कहा,

C: दीदी, तू काय कर री है? (दीदी, आप क्या कर रही हो?) ... एक बड़ा बच्चा जो उनकी बातचीत ध्यान से सुन रहा था, ने कहा “आप”, उसने छोटे बच्चे को समझाते हुए कहा कि शिक्षक से बात करते हुए भाषा की मर्यादा को ध्यान में रखना होता है।

ये दोनों उदाहरण अलग-अलग भाषा पैटर्न के कारण, भाषा के उपयोग में अंतर को दर्शाते हैं। अक्सर, इन अंतरों को कमियों की तरह देखते हुए स्कूलों के द्वारा पूरे समुदाय, संस्कृति और भाषा को हीन और असभ्य समझ लिया जाता है। उदाहरण के लिए, LiRIL अध्ययन में (Menon et al,2017), शिक्षकों द्वारा बच्चों की भाषाओं को अक्सर "अशुद्ध", "ग़लत" आदि से संदर्भित करते हुए देखा गया जबकि उनके स्वयं की मानक भाषा को अधिक "शुद्ध" माना गया था।

भाषा के विभिन्न पैटर्न के इस्तेमाल के कारण आदिवासी, दलित और प्रवासी समुदायों के बच्चे स्कूलों के भीतर भी अक्सर गंभीर भेदभाव का सामना करते हैं। उदाहरण के लिए, एक कन्नड़ भाषी स्कूल में बिहारी प्रवासी बच्चे को उसकी भाषा के साथ-साथ उसकी संस्कृति के बहिष्कार का भी सामना करना पड़ेगा। इसी तरह आदिवासियों को अक्सर अपनी भाषा और परंपराओं के लिए हाशिए पर रखा जाता है एवं उन्हें अक्सर विभिन्न अपमानजनक नामों जैसे नरभक्षी (आदमखोर), आदिवासी (अर्ध-सभ्य) आदि रूढ़िवादी नामों से संदर्भित किया जाता है ।

इन परिदृश्यों की बहुलता, कक्षाओं में शिक्षक द्वारा बच्चों के समर्थन के लिए आवश्यक समझ में कमी और भाषा सीखने की कठिनाइयों, बहिष्करण, भेदभाव जैसे गंभीर मुद्दों को जन्म देते हैं ।

वे कौन-से बच्चे हैं जो लगातार और बहुत ही गंभीर रूप से भाषा-आधारित बहिष्करण का सामना कर रहे हैं? यह तालिका कुछ श्रेणियों के बारे में बताती हैं।

भारत में कक्षाओं में भाषा-आधारित बहिष्करण के लिए सबसे अधिक संवेदनशील समूह

a. अल्पसंख्यक भाषाओं को बोलनेवाले
b. आदिवासी भाषा बोलनेवाले
c. प्रमुख भाषाओं को बोलनेवाले, जो प्रवासन की वजह से भाषाई अल्पसंख्यक या अप्रवासी बन जाते हैं
d. उर्दू जैसे भाषाओं को बोलनेवाले धार्मिक अल्पसंख्यक

(श्रीधर, 1996 से अनुकूलित)

यह आवश्यक है कि शिक्षक के रूप में हम विविधता के प्रति संवेदनशील रहें और अपनी कक्षाओं में इसके विकास के लिए सहायक वातावरण उपलब्ध कराएं । यह भी महत्वपूर्ण है कि हम लगातार औरसमझदारी से इस रूढ़िवादिता से लड़ें और बच्चों के संदर्भ में लिए गए निर्णयों को इससे प्रभावित न होने दें।

नोट: स्कूल में दाख़िला लेनेवाले आदिवासी बच्चों में से, 50% कभी भी कक्षा 5 तक नहीं पहुँच पाते और केवल 20% तक ही हाई स्कूल की परीक्षा देते है, जिसमें से केवल 8% ही वास्तव में पास होते हैं । सच्चाई यह है कि इनमें से कई छात्र "ड्रॉप-आउट" नहीं थे, लेकिन एक ग़ैर-ज़िम्मेदार प्रणाली में व्यवस्थित रूप से उनका, उनकी संस्कृतियों का, उनकी भाषाओं का और उनकी पहचान का अवमूल्यन होने से वे इससे "पुश-आउट" (ज़ोर-ज़बरदस्ती बाहर) किए गए । -(**मोहंती, 2009)**।

चर्चा हेतु प्रश्न:

1. किसी बच्चे की भाषा और संस्कृति के साथ भेदभाव किस तरह से उसे प्रभावित करता है?

2. एक बच्चे के रूप में आपके स्कूली अनुभवों ने अपनी मातृभाषा के प्रति आपकी ख़ुद की धारणा को कैसे प्रभावित किया है?

हम कक्षाओं में बच्चों की भाषाएं कैसे समावेशित कर सकते हैं?

पिछले खंडो में, हमने देश में भाषाई विविधता की प्रकृति पर विचार किया और साथ ही उन कारणों के बारे में भी बात की जिन्हें स्कूलों में प्रोत्साहित और पोषित किया जाना चाहिए। इस खंड में, हम संक्षेप में उन तरीक़ों पर विचार करेंगे जिनके द्वारा हम वास्तव में कई भाषाओं को अपनी कक्षाओं में शामिल कर सकते हैं। इस भाग में हम कुछ सुझाव प्रस्तुत करते हैं जिनका अनुसरण करके शिक्षक अपनी कक्षा में बच्चों की भाषाओं के लिए स्थान बना सकते है| हमारे देश की विविधता, सभी संदर्भों में शिक्षकों को बच्चों की भाषाओं को समान रूप से शामिल करने की अनुमति नहीं देता है। हम कम से कम तीन संभावित परिदृश्यों के बारे में सोच सकते हैं:

1. यदि शिक्षक अपनी कक्षा के निर्देश के माध्यम को बदलने में सक्षम नहीं हैं तो वे इसके लिए कुछ मापदंड बनाने और उन्हें संरक्षित करने की कोशिश कर सकते हैं जिसमें बच्चों को अपनी मातृभाषाओं का उपयोग करने की अनुमति दी जा सके और उसके लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाए|

2. ऐसा माहौल जो शिक्षक को अधिक लचीलापन और स्वतंत्रता देके, ताकि प्राथमिक कक्षाओं में निर्देश के माध्यम की भाषा के रूप में बच्चों को मातृभाषा का सार्थक उपयोग कराते हुए वे अंततः बच्चे को मानक भाषा की ओर ले जा सकें|

3. शिक्षक या संगठन जिस माहौल में काम कर रहे हैं उसमें पूरी तरह से लचीलापन होने से वे बच्चों को मातृभाषा का उपयोग करते हुए मानक भाषा तक लाने से कहीं आगे जा सकते हैं| वे प्राथमिक कक्षाओं तक बच्चे की भाषा को निर्देश के माध्यम के रूप में बनाए रख सकते हैं और समुदाय के सक्रिय सहयोग से इस भाषा का पोषण और विकास कर सकते हैं| मानक भाषा (और अंग्रेज़ी) को भी साथ-साथ शामिल किया जा सकता है।

निम्नलिखित सुझावों को ऊपर दी गयी तीनों स्थितियों में से किसी के साथ भी नियोजित किया जा सकता है। हालांकि, उनके उपयोग की सीमा उस संदर्भ पर निर्भर करेगी जिसमें शिक्षक ख़ुद को सहज पाता है।

1. **बच्चों की एक भाषा प्रोफ़ाइल बनाना:** सभी शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में बच्चों की एक सामाजिक-भाषाई प्रोफ़ाइल बनानी चाहिए| इस प्रोफ़ाइल में बच्चे के घर की भाषा, बच्चे के वातावरण की भाषाएं, ऐसी भाषाएं जिनसे बच्चा परिचित हो, के बारे में जानकारी होनी चाहिए| इसी तरह इस सुझाव का उपयोग ऊपर वर्णित सभी तीन स्थितियों के लिए किया जा सकता है।
2. **बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रोफ़ाइल:** सभी शिक्षकों को बच्चे के समुदाय, जनजाति, स्थानान्तरण/प्रवास पैटर्न, आर्थिक पृष्ठभूमि, परिवार के सदस्यों का साक्षरता स्तर, घर में उपलब्ध पठन-सामग्री इत्यादि जानकारियों की भी एक प्रोफ़ाइल बनाकर रखनी चाहिए। इस तरह की प्रोफ़ाइल बच्चों की जरूरतों और विशिष्ट सांस्कृतिक व्यवहारों को समझने और शिक्षक को उनके प्रति संवेदनशील बनाने के लिए एक अत्यंत मूल्यवान धरोहर होती है| एक संगठन Organization for

Early Literacy Promotion(OELP), अजमेर, जो कि साक्षरता अभियानों के लिए सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध है, इसपर विस्तृत कार्य करता है| इसमें हर वर्ष बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ब्यौरा लिया जाता है और हुए बदलावों को नियमित रूप से अपडेट किया जाता है|

3. **बहुभाषी कक्षाई वातावरण :** ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए, जो कक्षा में बच्चों की घरेलू भाषाओं का स्वागत करता हो। कक्षा को बहुभाषी चार्ट, लेबल, कविताएँ, कहानी की किताबें, शब्द कोने आदि प्रदर्शित करने के लिए तैयार किया जा सकता है और इसी तरह बच्चों को कई भाषाओं का उपयोग करने के अवसर को बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने में शामिल किया जाना चाहिए|

4. **स्कूल-सामुदायिक सहयोग:** भाषा अलगाव में विकसित नहीं होती बल्कि यह समुदाय की संस्कृति, इतिहास और परंपराओं के भीतर गुंथी होती है। स्कूल का विभिन्न प्रारंभिक भाषा और साक्षरता गतिविधियों में समुदाय के साथ सहयोग करने से स्कूल के प्रति समुदाय का स्वामित्व बना रहता है|

उदाहरण 1: "MLE-Plus" कार्यक्रम जो जनजातीय भाषाओं और उड़ीसा के लोगों के साथ काम करता है, इसमें कई गतिविधियों, जैसे कि क्षेत्र की नृवंशविज्ञान का अध्ययन करना, कहानी मेलों का आयोजन, गणित अभियान, पुस्तकों का निर्माण और मुद्रण, स्थानीय इतिहास और लोककथाएं, और खेल की घटनाओं और पिकनिक का आयोजन करने का काम है|

उदाहरण 2: OELP अजमेर, नियमित रूप से स्थानीय समुदायों द्वारा आयोजित "कहानी मेला" में बच्चों और समुदाय को शामिल करते हुए जीवंत गतिविधियों की एक श्रृंखला को शामिल करके साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन करता है| स्थानीय इतिहास, भौगोलिक और लोक-कथाओं को समुदाय के सहयोग के साथ जाना जाता है। पुस्तकें साझा की जाती हैं और उनका मुखर वाचन किया जाता हैं। बड़ों द्वारा गाँव की कहानियाँ सुनाई जाती हैं और बच्चे उन्हें लिखते हैं। बच्चों के समूह को समाचार पत्रों, कठपुतलियों के निर्माण, व्यक्तिगत स्टॉल इत्यादि के कामों से जोड़ा जाता है |

5. सहकर्मी समर्थन- यह उम्मीद करना अनुचित है कि एक शिक्षक को हमेशा बच्चे की भाषा में कुशल होना चाहिए, हालांकि यह उम्मीद करना उचित है कि शिक्षक इसके प्रति संवेदनशील रहें और इसे सीखने के प्रति उत्साहित रहें। शिक्षक और छात्रों के बीच संपर्क-भाषा की वास्तविक अनुपस्थिति के मामलों में, शिक्षक अन्य छात्रों की मदद ले सकते हैं जो बच्चे एवं शिक्षक दोनों की भाषा समझते हैं। उदाहरण के लिए, पूर्वोत्तर कर्नाटक के एक स्कूल का अवलोकन के दौरान देखा गया कि एक शिक्षक ने लम्बानी बोलनेवाले एक बड़े बच्चे से, उसी भाषा को बोलनेवाले एक छोटे बच्चे जिसने अभी-अभी पहली कक्षा में दाख़िला लिया था, से बातचीत करने में मदद ली ।

इस बातचीत से शिक्षक के साथ-साथ बड़े और छोटे दोनों बच्चों को भी मदद मिली| शिक्षक विभिन्न सहकर्मियों, तथा समुदाय के लोगों से भी मदद ले सकते हैं|

सरल बहुभाषी टी एल एम बनाएं: सरल टी एल एम, जैसे बहुभाषी चार्ट, शब्दों और ध्वनियों के लिए फ्लैश कार्ड, सरल शब्दकोश, बच्चों द्वारा चित्रित की गई छोटी किताबें बनाई जा सकती हैं।
मौजूदा कहानियों और कविताओं को स्थानीय संस्कृति और भाषा के अनुकूल भी बनाया जा सकता है। उदाहरण: OELP का रूपांतरण कविता 'ओल्ड मैकडोनाल्ड' से 'बूढ़े रामू काका'।

चर्चागत प्रश्न:

1. बच्चों के घर की भाषाओं के लिए कक्षा में जगह बनाने के लिए आप कुछ अन्य विचार क्या सोच सकते हैं?
2. कक्षा में बच्चों के घर की भाषाओं को किस उम्र तक समायोजित किया जाना चाहिए?

References

Jhingran, D. (2009). Hundreds of home languages in the country and many in most classrooms: Coping with diversity in primary education in India. *Social justice through multilingual education*, 263-282.

Menon, S., Krishnamurthy, R., Sajitha, S., Apte, N., Basargekar, A., Subramaniam, S., & Modugala, M. (2017). *Literacy Research in Indian Languages (LiRiL): Report of a Three-Year Longitudinal Study on Early Reading and Writing in Marathi and Kannada.* New Delhi: Tata Trusts.

Mohanty, A. K. (2009). Multilingual education: A bridge too far. *Social justice through multilingual education* (pp. 3-15).

Skutnabb-Kangas, Tove and Dunbar, Robert. 2010. Indigenous Children's Education as Linguistic Genocide and a Crime against Humanity? A Global View. *Gáldu Čála – Journal of Indigenous Peoples Rights* No. 1/2010

Sridhar, K. K. (1996). Language in education: Minorities and multilingualism in India. *International Review of Education, 42 (4). 327- 347.*

Written By: Shuchi Sinha | **Concept and Editing:** Shailaja Menon
Design & Layout: Harshita V. Das & Akhila Pydah